International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

स्वतंत्रता पूर्व कथा साहित्य में – वृद्धावस्था

डॉ. स्नेहलता निर्मलकर

सह–प्राध्यापक
हिन्दी –डॉ.सी.व्ही.रमन वि.वि.करगी रोड कोटा बिलासपुर (छ.ग.)

सारांष

सन् 1980 के बाद से लेकर 21 वीं शताब्दी के हाल के वर्षों में हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, किन्नर विमर्श, वृद्ध विमर्श, पुरुष विमर्श, विकलांग विमर्श आदि समूहों के अस्तित्व व अधिकारों को लेकर साहित्यकार अपनी विचारधारा पक्ष–विपक्ष के रूप में प्रस्तुत करता रहा है। मानवीय मौलिक अधिकारों हेतु साहित्य वर्ग हमेशा सजग और संवेदनशील रहता है। भारतीय संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव से अनेक समस्याएँ समाज को प्रभावित कर रही हैं। समाज का हर इंसान अनेक समस्याओं से ग्रस्त है। साहित्य में सामाजिक समस्याओं को प्राथमिकता दी जाती है। भारत में सामाजिक संरचना को भारतीय संस्कृति का विशेष अंग माना गया है। सामाजिक संरचना में समाज व परिवार दोनों को मान्यता प्राप्त है। परिवार का मुखिया घर में उपस्थित बुजुर्ग को ही माना जाता है। इस कारण जब भी कोई लेखक या रचनाकार अपने कथानक को कहानी या उपन्यास का रूप देने का प्रयास करता है तब घर का मुखिया वृद्ध ही होता है। वर्तमान समय की रचनाओं में वृद्धावस्था की समस्याओं का चित्रण देखने को मिलता है। वर्तमान समय में एकल परिवारों का महत्व बढ़ गया है। संयुक्त परिवारों का विघटन वृद्धों की मुख्य समस्या है। वर्तमान गद्य साहित्य में वृद्धों की इस समस्या का चित्रण प्रमुखतः होता है। साहित्य में वृद्धावस्था का चित्रण सामाजिक परिवेश में प्राचीन समय से मिलता हैं। प्राचीन समय की साहित्यिक सामग्री में वृद्धों के मान सम्मान पर अनेक प्रकार की चौपाई, श्लोक, दोहे और लोकोक्ति, मुहावरे प्राप्त होते हैं, जिनका प्रचलन वर्तमान समय में सामान्य रूप में होता है।

प्रमुख शब्द– विमर्श , संस्कृति, साहित्य, जीवनशैली, समस्या

1. प्रस्तावनाः– मनुष्य अपने संघर्षमय जीवन की लम्बी यात्रा तय करने के बाद वृद्धावस्था में प्रवेश करता है। वह अपने जीवन के कर्तव्य, उत्तरदायित्व, फर्ज, जिम्मेदारियों से मुक्त होकर स्वयं के लिए कुछ समय व्यतीत करना चाहता है। इस अवस्था को श्वृद्धावस्थाश कहते हैं। जब व्यक्ति स्वयं की आंकाक्षाओं को पूर्ण करना चाहता हैं। वृद्धावस्था में व्यक्ति अपनी स्वतंत्र विचारधारा को केन्द्र में रखकर जीवन व्यतीत करना चाहता हैं। वृद्ध व्यक्ति को समाज में अपने अस्तित्व को लेकर अलग–अलग विचारों का सामना करना पड़ता हैं। व्यक्ति वृद्ध होते ही सर्वप्रथम समाज व परिवार से अत्यन्त प्रिय व प्रेमपूर्वक सहयोग की आशा रखता हैं। वृद्ध व्यक्ति को समाज व परिवार से कुछ अपेक्षाएँ होती हैं, परन्तु आधुनिक समाज में इसकी आशा रखना निरर्थक सा प्रतीत होता हैं। पाश्चात्य समाज से प्रभावित होकर आज का युवावर्ग स्वतंत्र जीवन जीने का अभिलाषी हैं। किसी के अधिकार में रहना उन्हें स्वीकार्य नहीं है। अपनी स्वतंत्रता पर किसी प्रकार का आधिपत्य वें स्वीकार नहीं करना चाहते हैं। वृद्ध व्यक्तियों के साथ युवावर्ग को रहना बन्धन सा लगने लगता हैं। या फिर युवावर्ग अपने माता–पिता का बोझ उठाना नहीं चाहता हैं। मनुष्य अपने जीवन का इस अन्तिम अवस्था में भी युवावर्ग के अधीन बनकर रह जाता है। वृद्धावस्था को मनुष्य जीवन के महत्वपूर्ण निष्कर्ष के रूप में देखा जाता हैं, जहाँ व्यक्ति को पूर्ण रूप से स्वतंत्र जीने का अधिकार प्राप्त होना चाहिए। वृद्धावस्था एक धीरे–धीरे आने वाली स्वाभाविक व प्राकृतिक अवस्था है, जो अनिवार्यतः मनुष्य जीवन का अन्तिम पड़ाव हैं। व्यक्ति को मनुष्य जीवन के दौरान इस बात का आभास होता है कि एक औसत आयु की सीमा में पहुँचकर उसे वृद्ध होना ही है। इस अवस्था को रोका नहीं जा सकता है। वृद्ध व्यक्ति को इस अवस्था के दौरान अधिक विश्राम, आराम व देखभाल की आवश्यकता रहती है। मनुष्य जीवन में वृद्धावस्था का स्थान महत्वपूर्ण है। इस अवस्था में व्यक्ति अपनी सम्पूर्ण जिम्मेदारियों से मुक्त होकर आध्यात्म की तरफ उन्मुख रहता है। यह अवस्था व्यक्ति को भक्ति, साधना, सन्यास, मोक्ष की तरफ ले जाती हैं। वृद्ध व्यक्ति अपने सम्पूर्ण जीवन का निष्कर्ष इस अवस्था में आकर स्थापित करना चाहता है। व्यक्ति मोह, माया, सांसारिक सुख–दुख से हटकर सिर्फ ईश्वर की साधना में लिप्त रहना चाहता है। वृद्ध व्यक्ति मानसिक शान्ति की तलाश में रहता है जो सिर्फ ईश्वर के सानिध्य व

शरण में ही प्राप्त हो सकती है। आधुनिक समाज ने वृद्धावस्था को एक समस्या का रूप दिया है। प्राचीन समय में वृद्धावस्था नामक कोई समस्या अस्तित्व में नहीं थी। भारतीय संस्कृति की पहचान संयुक्त परिवार प्रणाली रही है। जिसके कारण घर–परिवार में बड़े बुजुर्ग व्यक्तियों को परिवार का मुखिया माना जाता रहा हैं। सयुक्त परिवार का विघटन आधुनिकीकरण की देन हैं। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक समस्याओं ने समाज को घेर रखा हैं। प्राचीन काल में वृद्ध व्यक्ति को आदर व मान–सम्मान की दृष्टि से देखा जाता था। संयुक्त परिवार में वृद्ध व्यक्ति की जिम्मेदारी पूरे परिवार पर रहती थी। युवावर्ग वृद्धों का आशीर्वाद लेकर ही घर से बाहर काम पर जाता था। मनुस्मृति के इस श्लोक में भी इस बात की पुष्टि की गई है।

''अभिवादन शीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते आयु र्विद्या यशोबलम् ।।

अर्थात प्रतिदिन बुजुर्गों को प्रणाम करने और उनकी सेवा करने वाले व्यक्ति की आयु, विद्या, कीर्ति और शक्ति में वृद्धि होती है।

2. ''वृद्ध'' शब्द का अर्थ :–हिन्दी शब्दकोश में किसी भी शब्द का निर्माण किसी उद्देश्य के लिए होता है। शब्द निर्माण में उसके अर्थ का विशेष महत्व रहता है। एक ही शब्द से अनेक शब्दों का निर्माण होना व उसके अलग–अलग अर्थ निकलना ही शब्दकोश को महत्वपूर्ण अध्ययन सामग्री के रूप में स्थान दिलाता हैं। वृद्ध शब्द से ही वृद्धावस्था और वृद्धाश्रम शब्दों का निर्माण हुआ हैं। शब्दकोश में वृद्ध शब्द के भिन्न–भिन्न अर्थ हैं। मानक हिन्दी शब्दकोश में ''वृद्ध'' शब्द का अर्थ विस्तृत रूप में अंकित किया गया है। प्रस्तुत ''वृद्ध'' शब्द के नवीन अर्थों से शब्द की महत्ता का ज्ञान प्राप्त होता हैं। वृद्ध शब्द का अर्थ तो एक ही निकलता है कि जिस व्यक्ति की उम्र एक निश्चित अवस्था से ऊपर हो यानी अधिक आयु का व्यक्ति। हमारे समाज में लगभग 60 वर्ष से अधिक आयु वर्ग को वृद्ध व्यक्तियों के लिए निश्चित किया गया है। मानक हिन्दी शब्दकोश में वृद्ध शब्द के अर्थ को एक नये आयाम तक पहुँचाने का प्रयास किया गया हैं। जो व्यक्ति अपने विचारों, भावों, गुणों व विद्या आदि से अधिक चतुर या विद्वान हो जाता हैं। उसे श्रेष्ठता की श्रेणी में लाकर वृद्ध कहलवा दिया जाता है। जो व्यक्ति धर्म, शास्त्रों का ज्ञान, तर्क, व्याकरण में परिपक्व हो चुका है उसे वृद्ध की संज्ञा समाज द्वारा दे दी जाती हैं। अर्थात जिस व्यक्ति की उम्र समय सीमा आधुनिक विचारधारा की होते हुए भी परम्परागत रूप से परिपक्व बनी रहती है वह व्यक्ति वृद्ध कहलाता हैं। वृद्धों को अपने जीवन के अनुभवों व विचारों के आधार पर श्रेष्ठ व सम्मानित बताया जाता है।

3. वृद्धावस्था और प्रेमचन्द की कहानियाँ :–हिन्दी कथा सम्राट कहलाने वाले मुंशी प्रेमचन्द के कथा साहित्य में वृद्धावस्था का चित्रण वास्तविक और यथार्थवादी है। प्रेमचन्द ने भारतीय समाज की लगभग विभिन्न समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। उन्होंने अपनी लेखन शैली से वृद्धों के जीवन की त्रासद व्यथा को प्रस्तुत किया है। प्रेमचन्द ने हिन्दी साहित्य में एक परम्परा को विकसित किया जिसने एक पूरी सदी तक साहित्यकारों का मार्गदर्शन किया। आधुनिक समय में भी कहानीकारों पर प्रेमचन्द का प्रभाव स्पष्ट रूप से झलकता है। ष्साहित्यकार अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए अविचलित रहना संभव नहीं होता है।ष हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श, दलित विमर्श, किसान विमर्श और वृद्ध विमर्श की नींव प्रेमचन्द द्वारा ही स्थापित की गयी थी। जिसका अनुसरण वर्तमान साहित्यकार कर रहे हैं। स्वतंत्रापूर्व कालीन समय को प्रेमचन्दकालीन समय भी कहा जाता है। प्रेमचंद की रचनाएँ हिन्दी साहित्य में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है। प्रेमचन्द कालीन रचनाएं जो कि वृद्धों, बुजुर्गों के जीवन पर आधारित है या उनकी समस्याओं को दर्शाती है वह इस प्रकार है।

❖ **बूढ़ी काकी :–** बचपन और बुढ़ापा दोनों मनुष्य जीवन में अहम भूमिका निभाते हैं। जब बच्चा खाना माँगता है तो माँ उसे बड़े प्रेम से गोद में बिठाकर खिलाती है वहीं एक बूढ़ी काकी जब खाने के लिए तरसती है तब कोइ उसे खाना नहीं देता और घर–परिवार, समाज के लोग उसे गालियाँ देते हैं, तिरस्कृत करते हैं। अन्धी और अपाहिज बूढ़ी काकी का यही हाल है, उनमें जिह्वा स्वाद के अतिरिक्त और कोई लालसा विद्यमान नहीं थी, अपने मनपसन्द भोजन से वह दूर नहीं रह सकती थी और अगर उसे भोजन नहीं मिलता तब वह जोर–जोर से चिल्लाकर रोने लगती थी। बूढ़ी काकी ने अपने पति की मृत्यु के पश्चात और निसन्तान होने के कारण अपनी सम्पत्ति भतीजे पण्डित बुद्धिराम के नाम पर कर दी थी। सम्पत्ति मिलते ही दोनों पति–पत्नी के स्वभाव में तीखापन आ गया था। बच्चे भी काकी को परेशान करने लगे थे। कोई चुटकी काट कर भागता, कोई पानी का कुल्ला कर देता। काकी के संताप और आर्तनाद पर कोई ध्यान नहीं देता था। पण्डित बुद्धिराम की छोटी लड़की लाड़ली को काकी से प्रेम व

संवेदना थी।बुद्धिराम के बड़े लड़के मुखराम का तिलक समारोह काकी के लिए नये–नये व्यंजनो का स्वाद लेने का सुनहरा मौका था। काकी मन ही मन मेहमानों के जाने के बाद भोजन की प्रतीक्षा करने लगी, परन्तु समय वर्षों सा प्रतीत हो रहा था, मन बहलाने के लिए कोठरी में से बाहर आ गई परन्तु रूपा की नजर जैसे ही काकी पर पड़ी वह क्रोध से काकी की तरफ झपट कर बोली ष्ऐसे पेट में आग लगे, बेट है या भाड़? कोठरी में बेठते हुए क्या दम घुटता था? अभी महेमानों ने नहीं खाया, भगवान को भोग नहीं लगा, तब तक धैर्य न हो सका? आकर छाती पर सवार हो गयी। जल जाय ऐसी जीभ। दिन भर खाती न होती तो न जाने किसकी हाँड़ी में मुँह डालती? गाँव देखेगा तो कहेगा कि बुढ़ियाँ भर पेट खाने को नहीं पाती तभी तो इस तरह मुँह बाये फिरती है। डायन न मरे न माँचा छोड़े। यहाँ पर काकी बड़पन दिखाते हुए चुपचाप रेंगती हुई अपनी कोठरी में चली गई। रूपा की इतनी कठोर वाणी थी कि हृदय और मस्तिष्क दोनों पर ही गहरा आघात पहुंचा था फिर भी काकी ने मन ही मन रूपा को सही माना, क्योंकि मेहमानों ने भोजन नहीं किया है तो घरवालों को भोजन कहा से मिलेगा।अब वह बुलावे की प्रतीक्षा करने लगी परन्तु काकी को भोजन की लालसा इतनी अधिक थी कि समय नहीं कट रहा था। गीत गाकर मन बहलाने का असफल प्रयास किया। बूढ़ी काकी की स्वादेन्द्रियों ने उन्हें पूड़ी, कचौरी खाने के लिए इतना अत्यधिक लालयित कर दिया कि वह आँगन तक आ पहुंची। परन्तु काकी के दुर्भाग्य ने उन्हे फिर थप्पड़ रसीद कर दिया। मेहमान अभी पंगत में बैठे भोजन कर रहे थे। एक अपाहिज बूढ़ी को देखकर वहाँ हलचल मच गई बुद्धिराम ने काकी को क्रोध से तिलमिलाते हुए निर्दयता से पकड़कर अंधेरी कोठरी में धम से पटक दिया। काकी का आशारूपी मन एक झटके में तहस–नहस कर दिया गया। अकेली लाड़ली के मन में काकी के लिए दया और करूणा का भाव जागृत हुआ। लाड़ली ने अपने हिस्से की पूड़ियाँ काकी के लिए बचा कर रखी और जब सभी सो गये तक काकी को पूड़ियाँ खिलाने गयी, परन्तु इन पूड़ियों ने काकी की क्षुधा को और अधिक उत्तेजित कर दिया था। मन की इच्छा के प्रबल प्रवाह में काकी का मन उचित और अनुचित का विचार न कर सका, काकी ने मेहमानों की जूठी पतलों से खाना प्रारम्भ कर दिया। बूढी काकी के लिए स्वादिष्ट व्यंजनों की तृष्णा इतनी बढ़ चुकी थी कि वह इच्छाओं पर नियंत्रण न रख सकी। रूपा को यह देखकर पश्चाताप हुआ उसने काकी से क्षमा मांगकर उनको भोजन परोसा।

''बूढ़ी काकी'' कहानी में वृद्ध महिला की समस्याओं का चित्रण करते हुए प्रेमचन्द ने वृद्धों के बहपन, सहनशील और क्षमाशील स्वभाव को प्रदर्शित कियाश्बूढ़ी काकीश कहानी में वृद्ध महिला की समस्याओं का चित्रण करते हुए प्रेमचन्द ने वृद्धों के बड़पन, सहनशील और क्षमाशील स्वभाव को प्रदर्शित किया हैं। वृद्धावस्था के दौरान व्यक्ति का मन चंचल और मासूम होता है, जिसे प्रेम के दो शब्दों से भी जीता जा सकता है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि हम उन्हें पहले अपमानित करें और फिर उनसे क्षमायाचना करें। वृद्धों को छोटे बच्चे की तरह प्रेम और देखभाल की आवश्यकता है। बूढ़ी काकी के जीवन में भी मान–
सम्मान और प्रेम की आंकाक्षा रही, जिसे उनका परिवार पूरा नहीं कर सका, ऐसे में बूढ़ी काकी अकेली पड़ जाती है, उसका दुःख, दर्द कोई सूनने वाला नहीं है। वर्तमान समय में बूढ़ी काकी की तरह ही कितनी ही वृद्ध महिलाएँ परिवार की बेरूखी और परायेपन के कारण स्वयं को अकेला पाती हैं, और चुपचाप सब सहन करती है।

❖ **विध्वंस :–** यद्यपि प्रेमचंद के कथा–साहित्य में आदिवासियों को जगह नहीं मिली है और न ही उनका आदिवासियों के जीवन से परिचय था, तथापि उनकी रचनाओं में दो जगहों पर आदिवासियों की चर्चा मिलती है ''गोदान'' उपन्यास में और श्सद्गतिश कहानी में। गोदान में शिकार–प्रसंग में मेहता और मालती की टोली शिकार ढूँढ़ते–ढूँढ़ते जंगल के एक ऐसे हिस्से में पहुँच जाती है, जहाँ उनकी मुलाकात वन–कन्या अर्थात् आदिवासी लड़की से होती है। प्रेमचंद ने उस वन–कन्या का चित्रण करते हुए पारंपरिक सौंदर्य चेतना के आलोक में भले ही उसे कुरूप बतलाया हो, पर उसके मांसल शरीर का वर्णन करते हुए मिस्टर मेहता को उसके प्रति आकृष्ट और उसके सेवा–भाव की प्रशंसा करते हुए दिखलाया है। यह वन–कन्या मेहता की पत्नी की कसौटी पर खड़ी उतरती है, अब यह बात अलग है कि दोहरे मानदंडों के साथ जीने वाले मेहता उसे अपनी पत्नी के रूप में नहीं स्वीकारते, वरन् वह मालती को ऊत्तेजित करने और अपने प्रति आकृष्ट करने के साधन भर में तब्दील होकर रह जाती है। मेहता पूरे प्रसंग में आदिवासी लड़की के ''अंगों का विलास'' देखते रहते हैं और मालती से डॉट खाने के बाद आते समय कहते हैं, 'अब मुझे आज्ञा दो, बहन''। प्रेमचंद पूरे प्रसंग में उस आदिवासी लड़की को नाम भी नहीं देते और उसे ''गँवारिन'' बनाने की कोशिश करते हैं।

इसी प्रकार ''सद्गति'' कहानी आदिवासी संदर्भ में प्रेमचंद के लेखन में आशा की किरण की तरह देखी जा सकती है। इस कहानी में विद्रोही चेतना से लैस एकमात्र पात्र है चिखुरी वह दुखी को पंडित घासीराम के शोषण से बचाने की हर संभव कोशिश करता है, लेकिन धर्मसत्ता के आत्मसातीकरण से उपजे भय के कारण दुखी उससे निकल नहीं पाता और त्रासद मौत का शिकार होता है। उसकी मौत के बाद चमरौने में जाकर वही दलितों को इस अन्याय की खबर देता और आंदोलित करने की कोशिश करता है, श्खबरदार, मुर्दा उठाने मत जाना। अभी पुलिस की तहकीकात होगी। दिल्लगी है एक गरीब की जान ले ली। पंडितजी होंगे, तो अपने घर के होंगे। इसके बाद पुलिस के भय से कोई भी दलित लाश उठाने नहीं जाता। इस तरह यह कहानी हिंदू धार्मिक संस्कारों से मुक्त एक गोंड़ के माध्यम से ब्राह्मणवाद के खिलाफ लड़ाई की कहानी है, जिसमें दलित और आदिवासी एकता की जरूरत की ओर संकेत भी है।

❖ **मन्त्र :–** ''मन्त्र'' प्रेमचन्द की सबसे लोकप्रिय आदर्शवादी कहानी है। यह कहानी बूढ़े भगत के जीवन पर आधारित है। बूढ़े भगत के सात बच्चे हुए, छह चल बसे एक ही बच्चा था। सात वर्ष का पन्ना वह भी बीमार चल रहा था। बूढ़ा भगत डॉक्टर चड्ढा के पास उसे लेकर गया। संध्या के समय चड्ढा साहब गोल्फ खेलने जा रहे थे। पन्ना को देखने से साफ इन्कार करके चले गये। बूढ़ा भगत बहुत मिन्नतें करता रहा पर वह नहीं माने सुबह आने के लिए बोल कर चले गये। उसी रात बूढ़े–बूढी का इकलौता सहारा चल बसा। कई साल गुजर गये। डॉक्टर चड्ढा के घर पर उनके बेटे कैलाश के जन्म दिवस की दावत चल रही है, तभी एक जहरीले साँप ने कैलाश को काट लिया। महफिल में कोहराम मच गया, कितने ही मन्त्र पढ़ने वाले आये पर कुछ फर्क न पड़ा सबने आशा छोड़ दी थी। शहर में दूसरी तरफ बूढ़ा भगत अपनी झोपड़ी में सोने की तैयारी कर रहा है. तभी किसी ने आकर डॉक्टर चड्ढा की दुखभरी दास्ता सुनाई ष्भगत के लिए जीवन में यह पहला अवसर था कि ऐसा समाचार पाकर वह बैठा रह गया हो। अस्सी वर्ष के जीवन में ऐसा कभी न हुआ था कि सॉप की खबर पाकर वह दौड़ाशहर में दूसरी तरफ बूढ़ा भगत अपनी झोपड़ी में सोने की तैयारी कर रहा है, तभी किसी ने आकर डॉक्टर चड्ढा की दुखभरी दास्ता सुनाई ष्भगत के लिए जीवन में यह पहला अवसर था कि ऐसा समाचार पाकर वह बैठा रह गया हो। अस्सी वर्ष के जीवन में ऐसा कभी न हुआ था कि साँप की खबर पाकर वह दौड़ा न गया हो।ष भगत को अपने पुत्र पन्ना की याद आ गई कुछ पलों की कशमकश के बाद भगत ने अपने कर्तव्य को चुना, उसकी निःस्वार्थ, निष्काम सेवा भाव की जीत हुई। भगत ने जाकर कैलाश की जान बचाई, भगत ने मन्त्र पढ़ना प्रारम्भ किया, कहारों ने कैलाश पर पानी डाला। सूर्य की पहली किरण के साथ ही कैलाश ने भी अपनी आँखें खोली। बूढ़ा भगत वहाँ से चुपचाप निकल गया।
''मन्त्र'' कहानी में बुढ़ापा भी व्यक्ति को निःस्वार्थ भाव से सेवा करने से नहीं रोक सकती यह दिखलाया गया है। अस्सी वर्ष की अवस्था में भी भगत ने प्रतिरोध व प्रतिकार को भुलाकर कर्तव्य की मिसाल पेश की है। बढ़ती उम्र भी व्यक्ति को प्राणरक्षा करने से नहीं रोक सकती है। बूढा भगत चाहता तो डॉक्टर चड्ढा से प्रतिरोध के रूप में कैलाश की जान को दाव पर लगा सकता था। परन्तु उसने अपने कर्तव्य और निष्काम भाव सेवा की प्राथमिकता देकर कैलाश की जान बचाई और डॉ. चड्ढा को अहसान जताने का मौका भी नहीं दिया।

❖ **बेटों वाली विधवा :–** भारतीय समाज में स्त्री को जन्म से पिता पर, विवाह के बाद पति पर व पति के बाद बेटों पर बोझ ही माना गया है। यह परम्परागत विचारधारा है। इस तथ्य को प्रेमचन्द ने कहानी में सफलता से अंकित किया है। पण्डित अयोध्यानाथ के निधन के बाद उनकी विधवा फूलमती का जीवन कष्टों भरा हो जाता है, जो आजतक घर की मालकिन थी, अब अन्धेरी कोठरी में पड़ी रहती है। पिता के जीवित रहते चारों बेटे व बहुए आदर्शवादी बनकर रहें। जैसे ही पिता का साथ छुटा सम्बन्धों में स्वार्थवृत्ति ने स्थान बना लिया। वृद्धा फूलमती का जीवन ष्पति के मरते ही अपने पेट के लड़के उसके शत्रु हो जाएँगे, उसको स्वप्न में भी अनुमान न था। जिन लडकों को उसने अपना हृदयरक्त पिला–पिलाकर पाला वहीं आज उसके हृदय पर यी आघात कर रहे हैं। अब वह घर उसे कांटों की सेज हो रहा था।ष्ष फूलमती के बच्चों ने उससे खीधन गहनों को भी हथिया लिया था। बेटी के विवाह के सजोयें सपने पूरे ना हो सके। अब फूलमती अपने बच्चों पर बोझ नहीं बनना चाहती थी इसलिए उसने घर के सारे काम करना प्रारम्भ कर दिया था। एक दिन गंगा नदी पर पानी लेने गई फूलमती को गंगा माँ ने अपनी लहरों में समाहित कर लिया। फूलमती की इतने वर्षों की तपस्या काकरूणाजनक अन्त हुआ।

''बेटों वाली विधवा'' कहानी में प्रेमचन्द ने सामाजिक जीवन में घटित सजीव घटना का चित्रण किया हैं। फूलमती का जीवन अपने पति के देहान्त के बाद नर्क बन गया। फूलमती ने अपने बच्चों के बदलते रंग को देखा, उनकी

स्वार्थवृत्ति को देखा। फूलमती ने अपने आत्म सम्मान की रक्षा के लिए घर–परिवार के सभी काम करना प्रारम्भ कर दिया। बुढ़ापे में चार बेटों की माँ होने पर भी फूलमती को संघर्षमय जीवन बिताना पड़ा। घर की मालकिन अब नौकरानी बन चुकी थी। पुरुष प्रधान समाज में प्रारम्भ से ही स्त्री को दूसरों पर आधारित माना जाता है। विधवा होने पर उसे अपने पति की सम्पत्ति में से बेदखल कर दिया जाता है। ऐसे में वृद्ध फूलमती गंगा की लहरों से स्वयं को बचाने का प्रयास भी नहीं करती है।

❖ **सुभागी :–** स्वतंत्रतापूर्व भारतीय समाज में बेटियों के जन्म पर दुःख मनाया जाता था, फिर भी बेटियों ने ही वृद्धावस्था के दौरान अपने बूढ़े माँ–बाप की लाठी बनकर उनको सम्भाला है। सुभागी भी एक ऐसी ही बेटी है जो अपने माता–पिता की सेवा करना ही अपना धर्म मानती है। बचपन में ही विधवा हो जाने पर सुभागी दूसरा विवाह नहीं करना चाहती और माता–पिता की सेवा में जीवन समर्पित करना चाहती है। परन्तु सुभागी का बड़ा भाई रामू और उसकी पत्नी इस जिम्मेदारी को नहीं उठाना चाहते हैं। तब सुभागी के पिता तुलसी को अपनी गलती का अहसास होता है। ष्जब रामू के जन्मोत्सव में उन्होंने रूपये कर्ज लेकर जलसा किया था, और सुभागी पैदा हुई, तो घर में रूपये रहते हुए भी उन्होंने एक कौड़ी न खर्च की। पुत्र को रत्न समझा था, पुत्री को पूर्वजन्म के पार्पो का दंड। वह रत्न कितना कठोर निकला और वह दंड कितना मंगलमय। सुभागी ने अपने बूढ़े माँ–बाप की जिम्मेदारी उठाई जबकि बेटे ने उन्हे घर से निकाल दिया। रामू अपने पिता को अन्तिम समय पर मिलने भी नहीं गया और न ही अन्तिम संस्कार में मुखाग्नि देने को तैयार हुआ। सुभागी ने अपने पिता को मुखाग्नि दी और माँ की भी अन्तिम समय तक सेवां करके अपना कर्तव्य निभाया। रामू ने अपने बूढ़े माँ–बाप की पीड़ा को नहीं समझा और समाज में उन्हे शर्मिंदगी का सामना करना पड़ा। ''सुभागी'' कहानी तत्कालीन समाज में उपस्थित विचारधारा से अवगत कराती है। जहाँ पर बेटों को अधिक महत्व दिया जाता था और बेटियों को बोझ समझा जाता था। परन्तु इसके विपरीत समाज में माता–पिता की सेवा करने का दायित्व शुरूआत से ही बेटियों ने ही निभाया है। बुढ़ापे में आकर माता–पिता को अपनी गलती का अहसास होता है जब बेटे और उनकी बहुएँ उन्हें प्रताड़ित और अपमानित करके घर से बाहर निकाल देते है, तब सुभागी जैसी बेटियों ही उनकी सेवा और देखभाल का कर्तव्य निभाती है। व्यक्ति जीवनभर अपने बच्चों की अच्छी परवरिश के लिए संघर्ष करता है। फिर भी वृद्धावस्था के दौरान उसे अपनेही परिवार में सुख प्राप्त नहीं हो पाता है। यह पीड़ा वृद्ध व्यक्ति को मौत के मुँह में जल्दी ले जाती है।

इस प्रकार प्रेमचन्द के कथा साहित्य में वृद्धावस्था में विभिन्न वृद्धों की समस्याओं को अंकित किया गया है। स्वतंत्रतापूर्व साहित्य में वृद्ध महिलाओं की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डालने का सार्थक प्रयास प्रेमचन्द ने किया है। वृद्धावस्था के दौरान वृद्ध पुरुष हो या वृद्ध महिला दोनों को वृद्धावस्था सम्बन्धित नियत त्रासदी का सामना करना पड़ता है।

4. वृद्धावस्था और जैनेन्द्र कुमार की कहानी :– जैनेन्द्र कुमार को हिन्दी साहित्य में पात्र प्रधान रचनाओं के लिए सराहा जाता रहा है। जैनेन्द्र कुमार की हिन्दी कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिक भावभूमि पर आधारित रचनाओं के लिए जाना जाता है। उनकी रचनाओं पर गाँधीवाद का प्रभाव देखा जा सकता है। अंहिसावाद और दार्शनिक विचार उनकी विशेषता है। जैनेन्द्र ने समाज के सूक्ष्म यथार्थ को साहित्य में स्थान दिया है। जैनेन्द्र कुमार की श्रूकिया बुढ़ियाश कहानी वृद्ध महिला के संघर्ष की कहानी है। उन्होंने समाजसमाज में अकेली वृद्ध महिला के जीवन की समस्याओं को प्रस्तुत किया है। रूकिया बुढ़िया कहानी एक लड़की से बुढ़िया बनने तक के संघर्षमय सफर को मार्मिकता से प्रकट करती है।

❖ **रूकिया बुढ़ियाः–** ''रूकिया बुढ़िया'' पहले रूकिमणी उसने अपने परिवार के खिलाफ जाकर दीना से विवाह किया और दिल्ली चली गयी। दिल्ली में दीना ने चम्पों नामक विधवा स्त्री से सम्बन्ध स्थापित कर लिये, अब रूकिमणी नये शहर में बिलकुल अकेली पड़ गयी थी। यही से रूकिमणी से रूकिया का संघर्ष शुरू होता है। परमात्मा ने उसे बड़ी शीघ्रता से बुढ़िया बना दिया था। आज वह एक ऐसी कोठरी में रहती है, जहाँ पहले गाय को बाँधा जाता था। मुश्किल से उसे यह कोठरी मिल गयी थी। गोबर साफ करके वह यहाँ रहने लगी थी। उस कोठरी में उसके सिवाय चूहें और केवल नरक ही रह सकता था। इसका भी वह डेढ़ रूपया किराया महीने देती थी। इस कोठरी में न दिन का पता चलता था, न रात का, धूप भी दर्शन नहीं देती थी।रूकिया बहुत सबेरे तीन बजे उठकर जमना जी पहुँच जाती और बेल, तुलसी और बतासे आदि के दोने तैयार करती जाती और कहती जाती श्माई परसाद ले जाओ, परसाद चढ़ाओंश जिसके मन में जो आता उसे दे देता था गेहूँ, जौ, मन्सूरी तांबा, इकन्नी आदि

इसी से रूकिया बुढ़िया का गुजारा चलता था। रूकिया को उसके घर के पास रहने वाले बच्चों से लगाव था। बच्चे भी उसे प्रेमभाव से कहते ष्नानो बुढ़िया, तु मरेगी, मैं तेरे पै फूल डालूंगी जित्ते फूल होंगे, सब डाल दूंगी।ष रूकिया भी प्यारी नन्नी को उठाकर प्रेम करना चाहती है, परन्तु वह स्वयं को देखती है, वह बुढ़िया है, कपड़े चिथड़े हो गये हैं, हड्डियाँ दिख रही हैं, बच्ची डर जायेगी। इसलिए वह बच्चों से स्वयं को दूर रखना चाहती है।
''रूकिया बुढ़िया'' एक पात्र प्रधान कहानी है। जिसमें दूसरे पात्र सिर्फ स्मृति प्रधान रहे है। रूकिया बुढ़िया ने जीवन में कुछ सुख नहीं पाया, वह संघर्षो के बोझ में घिरी रही। वह सबेरे तीन बजे उठकर जमना नदी के पास जाकर बैठ जाती है और सभी दर्शनार्थियों को फूल माला बेचने का काम करती है, उसी से उसका गुजारा चलता है। रूकिया एक ऐसी अन्धेरी कोठरी में रहती है जिसमें दुर्गन्ध के मारे साँस लेना भी मुश्किल है। समाज में वृद्धों की अनदेखी का सजीव उदाहरण रूकिया है। जिस कोई पूछने वाला भी नहीं है, वह मरें या जिये किसी को कोई फर्क नहीं पड़ेगा। कथाकार जैलेन्द्र ने वृद्धावस्था के दौरान रूकिया का जीवन कितना कष्टों भरा है उसका मार्मिक चित्रण किया है।

5. वृद्धावस्था और बेचन शर्मा ''उग्र'' की कहानी :–''बुढ़ापा'' बेचन शर्मा ''उग्र'' की कहानी है। यह कहानी बुढ़ापे का वास्तविक व यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करती हैं। बेचन जी को राष्ट्रवादी व क्रान्तिकारी रचनाओं के लिए जाना जाता है। मौलिक साहित्य व सत्य को ज्यों का त्यों चित्रित करना उनकी मुख्य विशेषता हैं। इसलिए उन्हे अक्खड़, अलमस्त व मनमौजी भी कहा जाता है। विवादों के साथ उनका गहरा सम्बन्ध रहा है। बुढ़ापा कहानी बुढ़ापे के संघर्ष को आत्मकथात्मक शैली के रूप में प्रस्तुत करती है। जिस व्यक्ति पर गुजरती है, वही दर्द समझ सकता हैं। इस प्रकार वृद्धावस्था की समस्या से जो व्यक्ति गुजर रहा होता है, वही दर्द, तकलीफ, वेढना, तड़प को बयां कर सकता है।

❖ **बुढ़ापा** :–''बुढ़ापा'' कहानी में एक वृद्ध जब युवा लड़कों के पास से गुजर रहा होता है। तब उनके भाव कुछ इस प्रकार होते है। ष्हट जाओ, हट जाओ। हनुमान गढी से भाग कर यह जानवर इस शहर में आया है। क्या अजीब शक्ल पायी है। पूरा किष्किन्धावासी मालूम पड़ता है।ष बूढ़ा हो जाने पर इन्सान बन्दर हो जाता हैं। उन्हें यह नहीं पता कल वह भी इसी अवस्था से गुजरेंगे। आज कमर झुक गई, आँखे कम देखने लगी, कान ने सुनना कम कर दिया तो किष्किन्धावासी बना दिये गयें। परन्तु हमेशा तो यह हालत नहीं थी। आज भी जिस पैसे पर यह युवा वर्ग उछल रहा हैं। वह उन्ही बूढ़ों की मेहनत की कमाई है। इसी कारण बूढ़ा व्यक्ति मुँह माँगी कीमत देकर भी जवान होना चाहता है, उससे यह पीड़ा सहन नहीं होती। वसन्तऋतु आने पर बूढे–से–बूढा रसाल भी मोर धारण कर झूमता है। तब बूढ़े व्यकित को बुढ़ापे के नरक का अहसास होता है। सभी मतवाली वर्षा ऋतु में प्रकृति के प्रांगण में उन्माद, सुख और विलास से नाच रहे हैं। तब अभागा बूढा सामने परोसी थाली भी नहीं खा सकता।बूढ़े व्यक्ति को पता है कि बुढ़ापे की कोई दवा नहीं है। इस बुढ़ापे से तो जवानी की गुलामी करोड़ गुना अच्छी है। बूढ़ा कहता है, जिस पर बीती उसी ने जानी, भोगना ही पड़ेगा बुढ़ापा, ईश्वर के पास भी इसका इलाज नहीं बुढ़ापे का एक ही अन्त है, चिता पर। अब तो प्रभु से यही प्रार्थना है रस्सी काट डालों। बूढ़े व्यक्ति को पता है कि बुढ़ापा जीवन की अन्तिम अवस्था है और इससे छुटकारा सिर्फ मृत्यु के द्वारा ही पाया जा सकता है। बुढ़ापा कहानी वर्तमान युवा वर्ग की विचारधारा का सजीव चित्रण करती है। युवा वर्ग के लिए बुढा व्यक्ति हास्य का केन्द्र मात्र रह गया हैं। युवा वर्ग में बूढ़ों के प्रति मान–सम्मान, संवेदना नहीं है। उनसे सहयोग व सहायता की अपेक्षा रखना बहुत बड़ी भूल है। पाश्चात्य संस्कृति और शहरीकरण से प्रभावित युवावर्ग के लिए व्यक्ति बूढ़ा होने पर बन्दर बन जाता है। परन्तु उन्हे इस बात का अहसास नहीं है कि वे भी एक दिन इसी बुढ़ापे से गुजरेंगे और इसी प्रकार दूसरों से अपमानित किये जायेंगे। वहीं दूसरी तरफ बूढा व्यक्ति किसी भी कीमत पर इस बुढ़ापे से मुक्त होकर जवान बनना चाहता है। प्रकृति के प्रांगण में ऋतुओं का आनन्द उठाना चाहता है। परन्तु यह बुढापा उसे परोसी थाली उठाकर खाने का साहस भी प्रदान नहीं कर पाता है।

इस प्रकार स्वतंत्रतापूर्ण के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श पर आधारित अनेक कहानियाँ देखने को मिलती है। प्रेमचन्द के कथा साहित्य में वृद्ध महिलाओं और उनकी समस्याओं का यथार्थवादी चित्रण किया गया हैं। बूढ़ी काकी, बेटो वाली विधवा, विध्वंस, रूकिया बुढ़िया, कहानियों में अकेली, मजबूर महिलाओं की समस्याओं को उठाया गया है वही मन्त्र, सुभागी, बुढ़ापा कहानियों में पुरुष वृद्धों की समस्याओं को प्रकाश में लाया गया है। इन कहानियों में सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं का समावेश किया गया है। इस प्रकार स्वतंत्रतापूर्व साहित्य में वृद्धावस्था के दौरान होने वाली सामाजिक समस्याओं को अंकित किया गया है। इससे साहित्य में नवीन विचारधारा का प्रवेश हुआ है।

6. उपसंहारः— कथा साहित्य समाज की समस्याओं की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति है। उस में तत्कालीन मनुष्य जीवन के विविध पक्षों का प्रस्तुतीकरण होता है। कथा साहित्य और समाज दोनों एक सिक्के के दो पहलू है। किसी भी समाज का वास्तविक चित्रण हमें कथा साहित्य में देखने को मिलता है। वर्तमान समाज में वृद्धों की स्थिति वेदनापूर्ण है। इक्कीसवीं शताब्दी में विश्व में वृद्धावस्था की समस्या बड़ी चुनौती बनकर उभर रही है। वृद्धावस्था पर कथा साहित्य में विमर्श का दौर चल पड़ा है। वैज्ञानिक प्रगति और सुख—सुविधाओं की वृद्धि के कारण मनुष्य जीवन की औसत आयु में बढ़ोतरी हो रही है। मनुष्य का बुढापा शारीरिक और मानसिक दोनों है इसे श्मनोदैहिकश भी कहा जा सकता है। वृद्ध व्यक्ति की मनोविश्लेषणात्मक विचारधारा व मनोभाव कभी स्वयं के लिए, कभी दूसरों के लिए दुविधा पैदा करती है। बदलते समय में वृद्धों का जीवन परिवार में कम और वृद्धाश्रर्मो में अधिक बीत रहा है। वृद्धाश्रमों की संख्या में प्रतिदिन वृद्धि होने से युवाओं के लिए अपनी जिम्मेदारी से मुक्त होने का एक विकल्प उपस्थित है। वृद्ध व्यक्ति परिवारों से दूर अकेले अजनबियों के बीच रहने को विवश है।वर्तमान पीढ़ी आधुनिकता की दौड़ में सामाजिक बन्धन, परिवार, अपनापन, ममत्व, कर्तव्यबोध से दूर होती जा रही है। जिसके कारण परिवार में पीढ़ीगत अन्तर आता जा रहा है। वृद्धों की स्वतंत्रता को युवावर्ग ने पराधीनता बना दिया है। वृद्धों पर आधुनिक विचारधारा को अपनाने का दबाव डाला जा रहा है। समय की बदलती आँधी में संयुक्त परिवारों का वर्चस्व मिट गया है। वर्तमान समय में वृद्ध व्यक्ति अपने जीवन में उपयोगितावादी विचारधारा से जुझता दिखता है। व्यक्ति की उपयोगिता पर उसका स्थान निर्धारित किया जा रहा है। साहित्यिक विमर्श की इस दौड़ में वृद्ध विमर्श का स्थान आवश्यकता से अधिक मजबूरी बनकर उभर रहा है। वृद्धों की दयनीय स्थिति का विश्लेषण सैद्धान्तिक पक्ष के साथ ही वृद्धों की सामाजिक स्थिति पर भी निर्भर करता है। मनुष्य जीवन में वृद्धावस्था एक प्राकृतिक घटना है जिससे सभी को गुजरना है परन्तु वृद्धों का वेदनापूर्ण और दयनीय स्थिति से गुजरना सामाजिक परिवेश व वातावरण पर आधारित हो गया है।

संदर्भ ग्रन्थो सूची

1. डॉ. सूबेदारराय, सिंह डॉ. राधारानी (1998) ,कथायन,भवदीय प्रकाशन, श्रृंगारहाट, अयोध्या, उत्तर प्रदेश।
2. मुंशी प्रेमचन्द कर्मभूमि(2019)मेपल प्रेस प्राईवेट लिमिटेड, सेक्टर 58, नोएडा, उत्तर प्रदेश।
3. शर्मा डॉ. बालकृष्ण कहानी निकुंज(1994)राजपाल एण्ड सन्श, कश्मीरी गेट, दिल्ली।
4. अवस्थी डॉ. देवीशंकर(1963), हिन्दी कहानियों का अधुनातन संकलन,राजकमल प्रकाशन,फेज बाजार, दिल्ली।
5. जैन डॉ. निर्मला (1973), जैनेन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँपूर्वोदय प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।
6. ह्रदयेशदस (2006), प्रतिनिधि कहानियाँ,किताबघर प्रकाशन, अंसारी रोड़, दरियागंज, नयी दिल्ली।
7. कालिया ममता (2007), दौड वाणी प्रकाशन, 4695, 21—ए, दरियागंज, नयी दिल्ली।
8. मुंशी प्रेमचंद (2014), निर्मला अनुपम प्रकाशन, पटना कॉलेज के सामने, पटना।
9. सोबती कृष्णा (2008) समय सरगम, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. 1—बी, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली।
10. अमृतराय(1977) , सरग (कहानी संग्रह),हंस प्रकाशन, इलाहाबाद।